Bihar Board Class 10, 2026 Sanskrit Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours	Maximum Marks :100	Total Questions :29

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए :

1. परीक्षा के 15 मिनट छात्रों का प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. यह प्रश्न-पत्र दो खंडों – खंड 'अ' तथा खंड 'ब' में विभाजित है ।
4. खंड 'अ' के बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है । बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु नकारात्मक अंक की व्यवस्था नहीं है । अतः सभी प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए ।
5. ओ.एम.आर. शीट पर उत्तर देने के प्रयास संबंधित गोलों को काटे नहीं तथा इरेजर एवं हाइटलाइटर का प्रयोग न करें ।
6. प्रत्येक प्रश्न के समुच्य उनके निर्धारित अंक दिये गये हैं ।
7. खंड 'ब' के प्रश्नों के उत्तर यथासंभव क्रमानुसार लिखने का प्रयास कीजिए जो प्रश्न नहीं आता हो उस पर समय नष्ट मत कीजिए ।
8. वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर देते समय सुंदर, स्पष्ट एवं पठनीय लेखन पर विशेष ध्यान दीजिए ।

---

1. 'इष्' धातु के लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन का रूप कौन-सा है ?

(A) इच्छेत्
(B) इच्छ
(C) इच्छति
(D) इच्छन्ति

Correct Answer : (C) इच्छति

Solution :

Step 1 : धातु की पहचान ।
यहाँ मूल धातु 'इष्' (चाहना) है । संस्कृत में कुछ धातुओं के रूप बदलते समय उनके मूल स्वरूप में परिवर्तन आता है, जैसे 'इष्' धातु का रूप 'इच्छ्' आदेश में बदल जाता है ।

Step 2 : लकार एवं पुरुष निर्धारण ।
प्रश्न में 'लट् लकार' (वर्तमान काल), प्रथम पुरुष और एकवचन पूछा गया है । लट् लकार के प्रथम

पुरुष एकवचन का प्रत्यय 'ति' होता है ।

Step 3 : रूप निर्माण ।
इच्छ् + ति = इच्छति । (पूरी तालिका : इच्छति - इच्छतः - इच्छन्ति) ।

Step 4 : अन्य विकल्पों का विश्लेषण ।
(A) **इच्छेत् :** यह विधिलिङ् लकार (प्रथम पुरुष, एकवचन) का रूप है । (B) **इच्छ :** यह लोट् लकार (मध्यम पुरुष, एकवचन) का रूप है । (D) **इच्छन्ति :** यह लट् लकार (प्रथम पुरुष, बहुवचन) का रूप है ।

Step 5 : निष्कर्ष ।
अतः, सही उत्तर विकल्प **(C) इच्छति** है ।

Quick Tip

संस्कृत में 'इष्' के समान ही 'गम्' का 'गच्छ्' और 'पा' का 'पिब्' आदेश हो जाता है, जिससे गच्छति और पिबति जैसे रूप बनते हैं ।

---

2. 'अकरोत्' किस लकार का रूप है ?

(A) लट् लकार
(B) लोट् लकार
(C) लृट् लकार
(D) लङ् लकार

Correct Answer : (D) लङ् लकार

Solution :

Step 1 : धातु की पहचान ।
'अकरोत्' शब्द संस्कृत की प्रसिद्ध 'कृ' (करना) धातु से बना है ।

Step 2 : लकार का निर्धारण ।
संस्कृत व्याकरण में भूतकाल को दर्शाने के लिए 'लङ् लकार' का प्रयोग किया जाता है । लङ् लकार की सबसे बड़ी पहचान यह है कि इसमें धातु के पूर्व में 'अ' (अ-आगम) जुड़ा होता है ।

Step 3 : रूप विश्लेषण ।
'कृ' धातु के लङ् लकार (भूतकाल), प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप 'अकरोत्' होता है । (तालिका : अ-करोत् - अकुरुताम् - अकुर्वन्) ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अतः, 'अकरोत्' शब्द लङ् लकार का रूप है । सही उत्तर विकल्प **(D)** है ।

Quick Tip

याद रखने का आसान तरीका : जिस क्रिया शब्द के शुरू में 'अ' लगा हो और अंत में हलन्त वाला 't्' हो (जैसे अभवत्, अपठत्, अकरोत्), वह लगभग हमेशा लङ् लकार (भूतकाल) होता है ।

---

3. स्वर सन्धि के कितने प्रमुख भेद हैं ?

(A) 4
(B) 5
(C) 3
(D) 2

Correct Answer : (B) 5

Solution :

Step 1 : सन्धि की परिभाषा ।
दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं । जब पहले शब्द का अंतिम वर्ण स्वर हो और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण भी स्वर हो, तो उनके मेल को 'स्वर सन्धि' कहा जाता है ।

Step 2 : भेदों का वर्गीकरण ।
संस्कृत और हिन्दी व्याकरण में स्वर सन्धि के मुख्य रूप से पाँच (5) भेद माने जाते हैं : 1. **दीर्घ सन्धि :** (अ + अ = आ) 2. **गुण सन्धि :** (अ + इ = ए) 3. **वृद्धि सन्धि :** (अ + ए = ऐ) 4. **यण सन्धि :** (इ + अ = य) 5. **अयादि सन्धि :** (ए + अ = अय)

Step 3 : निष्कर्ष ।
अत:, स्वर सन्धि के प्रमुख भेदों की संख्या विकल्प **(B)** के अनुसार 5 है ।

Quick Tip

याद रखें : सन्धि के मुख्य तीन प्रकार हैं (स्वर, व्यंजन, विसर्ग), लेकिन स्वर सन्धि के अपने स्वयं के पाँच उप-भेद होते हैं ।

---

4. 'शोभते' किस लकार का रूप है ?

(A) लट् लकार
(B) लोट् लकार
(C) लृट् लकार

(D) लङ् लकार

Correct Answer : (A) लट् लकार

Solution :

Step 1 : धातु की प्रकृति ।
'शोभते' शब्द 'शुभ्' (शोभा देना/सुंदर लगना) धातु से बना है । यह एक आत्मनेपदी धातु है ।

Step 2 : लकार का निर्धारण ।
संस्कृत में वर्तमान काल को प्रकट करने के लिए 'लट् लकार' का प्रयोग किया जाता है । आत्मनेपदी धातुओं में लट् लकार के प्रत्यय 'ते, एते, अन्ते' होते हैं ।

Step 3 : रूप विश्लेषण ।
'शुभ्' धातु का लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप 'शोभते' बनता है । (तालिका : शोभते - शोभेते - शोभन्ते) ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
चूँकि यह वर्तमान काल की क्रिया को दर्शाता है, अत: सही उत्तर विकल्प **(A) लट् लकार** है ।

Quick Tip

पहचान : यदि धातु के अंत में 'ते' (जैसे- लभते, रोचते, शोभते) लगा हो और वह वर्तमान काल का बोध कराए, तो वह आत्मनेपदी लट् लकार का रूप होता है ।

---

5. जन्मपूर्व संस्कारों की कुल संख्या कितनी है ?

(A) 5
(B) 6
(C) 3
(D) 4

Correct Answer : (C) 3

Solution :

Step 1 : भारतीय संस्कारों का परिचय ।
हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति में मुख्य रूप से 16 संस्कारों (षोडश संस्कार) का वर्णन मिलता है, जिन्हें जीवन के विभिन्न चरणों में संपन्न किया जाता है ।

Step 2 : जन्मपूर्व श्रेणी का वर्गीकरण ।
इन 16 संस्कारों को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटा गया है । जन्म से पूर्व किए जाने वाले संस्कारों की संख्या **तीन (3)** है ।

Step 3 : जन्मपूर्व संस्कारों के नाम ।
ये तीन संस्कार निम्नलिखित हैं : 1. **गर्भाधान :** गर्भ धारण के समय । 2. **पुंसवन :** गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास और पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु । 3. **सीमन्तोन्नयन :** गर्भवती स्त्री की प्रसन्नता और सुरक्षा के लिए ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, जन्मपूर्व संस्कारों की कुल संख्या विकल्प **(C)** के अनुसार 3 है ।

Quick Tip

भारतीय संस्कारों का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शरीर और मन का शुद्धिकरण तथा उसे श्रेष्ठ नागरिक बनाना है ।

---

6. मैत्रेयी कौन थी ?

(A) याज्ञवल्क्य की पुत्री
(B) याज्ञवल्क्य की भगिनी
(C) याज्ञवल्क्य की पत्नी
(D) याज्ञवल्क्य की शिष्या

Correct Answer : (C) याज्ञवल्क्य की पत्नी

Solution :

Step 1 : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ।
मैत्रेयी प्राचीन भारत की एक अत्यंत विदुषी और दार्शनिक महिला थीं, जिनका उल्लेख बृहदारण्यक उपनिषद में विस्तार से मिलता है ।

Step 2 : संबंधों का विवरण ।
ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, मैत्रेयी प्रसिद्ध ऋषि **याज्ञवल्क्य की पत्नी** थीं । ऋषि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं— कात्यायनी और मैत्रेयी ।

Step 3 : दार्शनिक महत्व ।
मैत्रेयी अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासा के लिए जानी जाती हैं । जब याज्ञवल्क्य ने अपनी संपत्ति का बँवारा करना चाहा, तब मैत्रेयी ने धन के स्थान पर 'अमृतत्व' (आत्म-ज्ञान) की शिक्षा माँगी थी ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, मैत्रेयी ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं । सही उत्तर विकल्प **(C)** है ।

Quick Tip

मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य के बीच 'आत्मा' और 'अमृतत्व' पर हुआ संवाद उपनिषदों के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक अंशों में से एक माना जाता है ।

---

7. 'लेखितुम्' का प्रकृति-प्रत्यय निम्न में कौन-सा है ?

(A) लेख् + तुमुन्
(B) लिख् + तुमुन्
(C) लिख् + तसिल्
(D) लिख् + क्तवतु

Correct Answer : (B) लिख् + तुमुन्

Solution :

Step 1 : मूल धातु की पहचान ।
'लेखितुम्' शब्द में मूल क्रिया या धातु **'लिख्'** (लिखना) है । विकल्पों में (A) में 'लेख्' दिया गया है जो धातु का गुण रूप है, मूल रूप नहीं ।

Step 2 : प्रत्यय का निर्धारण ।
जिस संस्कृत शब्द के अंत में 'तुम्' शेष रहता है, वहाँ **'तुमुन्'** प्रत्यय का प्रयोग होता है । यह प्रत्यय 'के लिए' (निमित्त) के अर्थ को प्रकट करता है ।

Step 3 : व्याकरणिक प्रक्रिया ।
जब 'लिख्' धातु के साथ 'तुमुन्' प्रत्यय जुड़ता है, तो 'लिख्' की उपधा 'इ' को गुण होकर 'ए' हो जाता है और इट् का आगम होने पर शब्द **'लेखितुम्'** बनता है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, सही प्रकृति-प्रत्यय विच्छेद विकल्प **(B)** है ।

Quick Tip

पठितुम् (पढ़ने के लिए), चलितुम् (चलने के लिए), और लेखितुम् (लिखने के लिए) — इन सभी में 'तुमुन्' प्रत्यय का ही चमत्कार है ।

8. 'अध्यात्म' में कौन-सा उपसर्ग है ?

(A) अभि
(B) आङ्
(C) अधि
(D) अति

Correct Answer : (C) अधि

Solution :

Step 1 : शब्द का विच्छेद ।
'अध्यात्म' शब्द का संधि विच्छेद करने पर हमें **'अधि + आत्म'** प्राप्त होता है ।

Step 2 : उपसर्ग की पहचान ।
उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द के पूर्व में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं । यहाँ 'आत्म' शब्द के पूर्व में **'अधि'** जुड़ा है ।

Step 3 : संधि नियम ।
यहाँ यण संधि का नियम लागू होता है : $i + a = ya$ । जब 'अधि' का 'इ' और 'आत्म' का 'आ' मिलते हैं, तो 'य' बनता है, जिससे शब्द 'अध्यात्म' सिद्ध होता है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, 'अध्यात्म' शब्द में सही उपसर्ग विकल्प **(C) अधि** है ।

Quick Tip

अधि उपसर्ग का प्रयोग प्राय: 'ऊपर', 'श्रेष्ठ' या 'अंदर' (जैसे : अधिकार, अधिपति, अध्ययन) के अर्थ में किया जाता है ।

9. 'निर्बन्ध :' में कौन-सा उपसर्ग है ?

(A) निर्
(B) निर
(C) नि
(D) नि:

Correct Answer : (A) निर्

Solution :

Step 1 : उपसर्ग की परिभाषा ।
उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं । संस्कृत में कुल 22 मुख्य उपसर्ग माने गए हैं ।

Step 2 : शब्द विच्छेद ।
'निर्बन्ध :' शब्द का विश्लेषण करने पर हमें **'निर् + बन्ध :'** प्राप्त होता है । यहाँ 'बन्ध' मूल शब्द है और 'निर्' उपसर्ग है ।

Step 3 : व्याकरणिक शुद्धता ।
विकल्प (A) और (B) में अंतर 'र्' के नीचे लगे हलन्त का है । संस्कृत व्याकरण में शुद्ध उपसर्ग **'निर्'** (हलन्त युक्त) होता है । विकल्प (D) 'निः' विसर्ग संधि के बाद का रूप हो सकता है, लेकिन मूल उपसर्ग 'निर्' ही माना जाता है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अतः, 'निर्बन्ध :' में सही उपसर्ग विकल्प **(A) निर्** है ।

Quick Tip

निर्, दुर्, निस्, और दुस्—इन चारों उपसर्गों में हमेशा हलन्त (्) का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि यही इनकी मानक व्याकरणिक अवस्था है ।

---

10. 'करणे तृतीया' सूत्र से किस वाक्य में तृतीया विभक्ति हुई है ?

(A) श्याम : कलमेन लिखति ।
(B) विप्रेण वेद : पठ्यते ।
(C) पिता पुत्रेण सह गच्छति ।
(D) गोपाल : पादेन खञ्ज : अस्ति ।

Correct Answer : (A) श्याम : कलमेन लिखति ।

Solution :

Step 1 : सूत्र की व्याख्या ।
संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'करणे तृतीया' सूत्र का अर्थ है कि क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक हो (करण कारक), उसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण ।
(A) **कलमेन लिखति :** यहाँ लिखने की क्रिया में 'कलम' सबसे प्रधान साधन (करण) है, इसलिए इसमें

'कलमेन' पद में 'करणे तृतीया' से विभक्ति हुई है ।
(B) **विप्रेण वेद : पठ्यते :** यहाँ कर्मवाच्य होने के कारण कर्ता (विप्र) में तृतीया हुई है (कर्तरि तृतीया) ।
(C) **पुत्रेण सह :** यहाँ 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से 'सह' के योग में तृतीया हुई है ।
(D) **पादेन खञ्ज ::** यहाँ 'येनाङ्गविकार :' सूत्र से शरीर के विकृत अंग में तृतीया हुई है ।

Step 3 : निष्कर्ष ।
शुद्ध रूप से करण कारक के अर्थ में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प **(A)** में हुआ है ।

Quick Tip

जब भी किसी यंत्र या साधन (जैसे हाथ, पेन, कुल्हाड़ी) से कोई कार्य किया जाए, तो वह 'करणे तृतीया' का सबसे सटीक उदाहरण होता है ।

---

11. 'एतत्' शब्द का रूप निम्न में कौन-सा है ?

(A) सा
(B) इयम्
(C) असौ
(D) एष :

Correct Answer : (D) एष :

Solution :

Step 1 : सर्वनाम शब्द की पहचान ।
'एतत्' (यह) संस्कृत का एक सर्वनाम शब्द है जिसका प्रयोग समीपवर्ती वस्तु या व्यक्ति के लिए किया जाता है ।

Step 2 : रूप विश्लेषण ।
'एतत्' शब्द के पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन में रूप **'एष :'** बनता है । (तालिका : एष : - एतौ - एते) ।

Step 3 : अन्य विकल्पों का विश्लेषण ।
(A) **सा :** यह 'तत्' (वह) शब्द का स्त्रीलिंग रूप है । (B) **इयम् :** यह 'इदम्' (यह) शब्द का स्त्रीलिंग रूप है । (C) **असौ :** यह 'अदस्' (वह) शब्द का रूप है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
चूँकि केवल 'एष :' ही 'एतत्' का रूप है, अत: सही उत्तर विकल्प **(D)** है ।

Quick Tip

संस्कृत में 'एतत्' और 'इदम्' दोनों का अर्थ 'यह' होता है, लेकिन 'एतत्' का प्रयोग अत्यधिक निकटता दर्शाने के लिए किया जाता है ।

---

12. भीखनटोला गाँव को देखने कौन आये ?

(A) नेता
(B) मंत्री
(C) शिक्षक
(D) महात्मा

Correct Answer : (C) शिक्षक

Solution :

Step 1 : पाठ का संदर्भ ।
यह प्रश्न संस्कृत पाठ्यपुस्तक की प्रसिद्ध कहानी 'कर्मवीर कथा' से लिया गया है । यह कहानी एक दलित बालक (रामप्रवेश राम) के संघर्ष और उसकी सफलता की प्रेरणादायक यात्रा का वर्णन करती है ।

Step 2 : कहानी का सारांश ।
भीखनटोला बिहार प्रान्त के एक दुर्गम क्षेत्र में स्थित एक निर्धन गाँव था । वहाँ के लोगों का जीवन अत्यंत कष्टमय था । एक बार उस गाँव की स्थिति का जायजा लेने और उसे देखने के लिए एक नवीन दृष्टि संपन्न, सामाजिक समरसता के पक्षधर **शिक्षक** आए ।

Step 3 : प्रभाव ।
उस शिक्षक ने गाँव के एक प्रतिभाशाली बालक को खेलते हुए देखा और उसकी प्रतिभा को पहचानकर उसे पढ़ाना शुरू किया, जिससे बालक आगे चलकर उच्च पद पर आसीन हुआ ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, भीखनटोला गाँव को देखने विकल्प **(C) शिक्षक** आए थे ।

Quick Tip

'कर्मवीर कथा' हमें सिखाती है कि कठिन परिश्रम और सही मार्गदर्शन (शिक्षक) के माध्यम से कोई भी व्यक्ति विषम परिस्थितियों में भी महानता प्राप्त कर सकता है ।

---

13. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ रामायण के किस सर्ग से संकलित है ?

(A) 91 वें सर्ग से
(B) 92 वें सर्ग से
(C) 93 वें सर्ग से
(D) 95 वें सर्ग से

Correct Answer : (D) 95 वें सर्ग से

Solution :

Step 1 : पाठ का स्रोत ।
'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ महर्षि वाल्मीकि रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामायण' के अयोध्याकाण्ड से लिया गया है ।

Step 2 : सर्ग की पहचान ।
अयोध्याकाण्ड के अन्तर्गत यह पाठ विशेष रूप से 95 वें सर्ग (सर्ग संख्या 95) से संकलित है । इसमें भगवान राम द्वारा माता सीता को मन्दाकिनी नदी की सुंदरता का वर्णन करते हुए दिखाया गया है ।

Step 3 : काव्य सौंदर्य ।
इस सर्ग में चित्रकूट स्थित मन्दाकिनी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य, वहाँ के पक्षियों, वृक्षों और ऋषियों के स्नान आदि का अत्यंत मनोरम वर्णन अनुष्टुप छंद में किया गया है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, सही उत्तर विकल्प **(D) 95 वें सर्ग से** है ।

Quick Tip

याद रखने के लिए : मन्दाकिनी का वर्णन अयोध्याकाण्ड में है और इसकी सर्ग संख्या '95' है । यह प्रश्न बिहार बोर्ड की संस्कृत परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है ।

---

14. 'विशालाक्षि' किसका सम्बोधन है ?

(A) उर्मिला का
(B) सीता का
(C) रमा का
(D) लक्ष्मी का

Correct Answer : (B) सीता का

Solution :

Step 1 : शब्द का अर्थ ।
'विशालाक्षि' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है : विशाल + अक्षि । इसका अर्थ होता है "बड़ी-बड़ी आँखों वाली" ।

Step 2 : पाठ का संदर्भ ।
यह प्रश्न 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ से लिया गया है, जो वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड का हिस्सा है । इस पाठ में भगवान राम वनवास के दौरान चित्रकूट में मन्दाकिनी नदी की शोभा का वर्णन कर रहे हैं ।

Step 3 : सम्बोधन की पहचान ।
नदी की सुंदरता दिखाते समय श्री राम अपनी पत्नी सीता को सम्बोधित करने के लिए 'विशालाक्षि', 'सीते', 'प्रिये' और 'तनुमध्यमे' जैसे विशेषणों का प्रयोग करते हैं ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, 'विशालाक्षि' सम्बोधन सीता जी के लिए प्रयुक्त हुआ है । सही उत्तर विकल्प **(B)** है ।

Quick Tip

मन्दाकिनीवर्णनम् पाठ में प्रकृति चित्रण के साथ-साथ श्री राम के अपनी पत्नी के प्रति प्रेमपूर्ण सम्बोधन भी साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

---

15. दुराचारी कौन था ?

(A) पथिक
(B) बाघ
(C) पण्डित
(D) दानव

Correct Answer : (B) बाघ

Solution :

Step 1 : पाठ का संदर्भ ।
यह प्रश्न नारायण पंडित रचित 'हितोपदेश' के 'व्याघ्रपथिककथा' (बाघ और राही की कहानी) शीर्षक पाठ से लिया गया है ।

Step 2 : पात्र का परिचय ।
कहानी में एक बूढ़ा बाघ है जो तालाब के किनारे हाथ में सोने का कंगन लेकर बैठा है । वह स्वयं को सुधारने का ढोंग करता है ताकि वह राही (पथिक) को जाल में फँसा सके ।

Step 3 : दुराचारी की पहचान ।
बाघ स्वीकार करता है कि वह अपनी युवावस्था में अत्यंत **दुराचारी** था, जिसने अनेक गायों और मनुष्यों का वध किया था, जिसके कारण वह वंशहीन हो गया था । यह स्वीकारोक्ति वह पथिक का विश्वास जीतने के लिए करता है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, इस कथा के संदर्भ में 'दुराचारी' शब्द का प्रयोग विकल्प **(B) बाघ** के लिए किया गया है ।

Quick Tip

लोभ के कारण पथिक उस दुराचारी बाघ की बातों में आ गया और अंतत: कीचड़ में फँसकर अपनी जान गँवा बैठा । यह कहानी लोभ के दुष्परिणामों को दर्शाती है ।

---

16. 'नदी' शब्द के तृतीया विभक्ति, एकवचन का रूप निम्न में कौन है ?

(A) नद्या
(B) नद्या :
(C) नद्य :
(D) नद्याम्

Correct Answer : (A) नद्या

Solution :

Step 1 : शब्द रूप की पहचान ।
'नदी' एक ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द है । संस्कृत व्याकरण में ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप एक निश्चित पद्धति पर चलते हैं ।

Step 2 : विभक्ति विश्लेषण ।
'नदी' शब्द के प्रथमा से तृतीया विभक्ति के एकवचन रूप इस प्रकार हैं : प्रथमा एकवचन : नदी द्वितीया एकवचन : नदीम् **तृतीया एकवचन : नद्या**

Step 3 : अन्य विकल्पों का स्पष्टीकरण ।
(B) **नद्या :** – यह पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति का एकवचन रूप है । (C) **नद्य :** – यह प्रथमा विभक्ति का बहुवचन रूप है । (D) **नद्याम्** – यह सप्तमी विभक्ति का एकवचन रूप है ।

Step 4 : निष्कर्ष ।
अत:, तृतीया विभक्ति एकवचन का सही रूप विकल्प **(A) नद्या** है ।

Quick Tip

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों (जैसे जननी, देवी, नदी) के तृतीया एकवचन में अंत में 'या' जुड़ता है । उदाहरण : जनन्या, देव्या, नद्या ।